आखिरी चुल्लू

अनुराग मिश्र गैर

मटरू यह वो दौर था जब पानी पिलाना बहुत ही पुण्य का काम माना जाता था, उस समय पुराने जमींदार साहब ने यहां पर एक रस्सी, बाल्टी तथा लोटा रखवा दिया था, आते-जाते बटोही यहीं मेरे चबूतरे पर बैठकर सुस्ताते थे तथा मेरा ठण्डा पानी पीकर तृप्त होते थे। डाकिया बाबू जब भी गांव में चिट्ठी-पत्री बांटने के लिए आते थे। मेरा पानी पीने जरूर आते थे। तब के लोगों में नैतिकता थी। बाल्टी-लोटा दिन-रात यहीं पड़ा रहता था। मजाल नहीं कि कोई हाथ लगा देता। मटरू बड़ी ही तन्मयता के साथ कुएं की कहानी सुन रहा था, उसके लिए यह सब कल्पनातीत था। उसने तो बचपन से कुएं का उजड़ा चबूतरा, उस पर बेतरतीब उगी घास-फूस, पेड़-पौधे और उसके भीतर भरे पड़े कूड़ा-करकट, पॉलीथीन, बीड़ी-सिगरेट-तम्बाकू के रैपर तथा शराब की खाली शीशियां और पाउच आदि ही देखे थे।

आज वैशाखी पूर्णिमा का ही दिन था गोधुलि रात में तब्दील हो रही थी और उज्ज्वल चांद गगन के पश्चिमी क्षितिज पर धीरे-धीरे सरकता हुआ ऊपर बढ़ रहा था, सहसा मटरू कबूतर फड़फड़ाता हुआ पक्के कुएं के छेद में बने अपने घोंसले में आ बैठा। कुछ समय के लिए उस उजड़े कुएं की नीरवता भंग हुई, फिर चतुर्दिक वही सन्नाटा पसर गया। मटरू कबूतर ने दो-चार बार अपने पंख फड़फड़ाये, पंखों में रगड़ कर अपनी चोंच साफ की गुटरगू की आवाज निकाली और कुएं की तलहटी में झांकने लगा। कुएं की तलहटी में बमुश्किल एक चुल्लू भर पानी दिखाई दे रहा था, मटरू को अपनी ओर देखता देख, कुआं भावुक होने लगा, वह अपने को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था, पर उसकी सिसकियां निकलने लगी, मटरू तुरंत उड़कर तलहटी में पहुंचा और कुएं को ढाढ़स बंधाकर चुप कराया तथा उससे इस उदासी और दुःख का कारण पूछने लगा।

पहले तो कुएं ने आनाकानी की, पर जब मटरू ज्यादा ही पीछे पड़ गया तो कुएं ने रूंधे गले से अपनी व्यथा सुनानी शुरू की "मटरू बेटा तुम तो जान ही रहे हो कि आज बैशाख मास की पूर्णिमा है, आज भगवान बुद्ध की जयंती है, उन्होंने पूरी दुनिया को शान्ति का संदेश दिया पर इस मानव जाति ने एकदम उलटा रास्ता पकड़ लिया, इसने अपनी शान्ति तो गंवायी ही साथ ही साथ सारी पृथ्वी और इसके जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों का सुख-चैन छीन लिया।" आज बैशाख की पूर्णिमा हीं तो है, अभी जेठ महीने में एक भी दिन नहीं चढ़ा है, पर मेरी तलहटी में एक चुल्लू भर पानी बचा है मैं अंतिम सांसे ले रहा हूं जिस भी क्षण यह पानी सूख जायेगा मेरे प्राण पखेरू उड़ जायेंगे। कभी मैं पूरी गर्मी पानी से लबालब भरा रहता था। गर्मी में मेरा पानी इतना ठंडा रहता था कि दस कोस तक के गांवों में मेरे पानी की मिठास एवं शीतलता प्रसिद्ध थी पर हाय राम! मैं बैशाख में ही अंतिम सांसें ले रहा हूं।

मटरू बेटा तुमने तो वह 30-40 साल पहले का युग नहीं देखा है पर तुम्हारे दादा-परदादा जो इस पीपल वृक्ष

पर निवास करते थे, वे यह सब देखे थे। तब गांव में एक भी हैंड पम्प नहीं लगा था, गांव के सीवान पर दूसरी पंचवर्षीय योजना के तहत एक सरकारी नलकूप जरूर लग गया था। लगभग आधा गांव पानी के लिए मुझ पर ही आश्रित था, खाने-पीने से लेकर नहाने-धोने व पशुओं तक के लिए सब लोग यहीं से पानी ले जाया करते थे। सुबह से लेकर शाम तक यहां तांता लगा रहता था। गांव की बहुएं यहीं पर अपना सुख-दुःख एक दूसरे से बांटती थी। सास-ननद की शिकायत से लेकर मायके के सुखद संस्मरण यहीं बतियाये जाते थे। गांव की किशोरियां जब पानी भरने आती थी तो यहीं हंसी-ठिठोली करती थी, अपने मन में किसी के प्रति अंकुरित हो रहे प्रेम के बीज को अपनी घनिष्ठ सहेली से वे यहीं साझा करती थी।

मटरू यह वो दौर था जब पानी पिलाना बहुत ही पुण्य का काम माना जाता था, उस समय पुराने जमींदार साहब ने यहां पर एक रस्सी, बाल्टी तथा लोटा रखवा दिया था, आते-जाते बटोही यहीं मेरे चबूतरे पर बैठकर सुस्ताते थे तथा मेरा ठण्डा पानी पीकर तृप्त होते थे। डाकिया बाबू जब भी गांव में चिट्ठी-पत्री बांटने के लिए आते थे। मेरा पानी पीने जरूर आते थे। तब के लोगों में नैतिकता थी। बाल्टी-लोटा दिन-रात यहीं पड़ा रहता था। मजाल नहीं कि कोई हाथ लगा देता। मटरू बड़ी ही तन्मयता के साथ कुएं की कहानी सुन रहा था, उसके लिए यह सब कल्पनातीत था। उसने तो बचपन से कुएं का उजड़ा चबूतरा, उस पर बेतरतीब उगी घास-फूस, पेड़-पौधे और उसके भीतर भरे पड़े कूड़ा-करकट, पॉलीथीन, बीड़ी-सिगरेट-तम्बाकू के रैपर तथा शराब की खाली शीशियां और पाउच आदि ही देखे थे। सहसा तेज आवाज में फूहड़ गाना बजाता एक ट्रैक्टर धड़धड़ाता हुआ कुएं के बगल से गुजरा और उसकी प्रतिध्वनि से कुआ गूंज उठा।

मटरू उन दिनों शादियां सिर्फ गर्मी के दिनों में ही होती थी। गांव में जब कोई बारात आती थी तो पास के ही बाग में ठहरती थी, बारातियों के लिए पीने का पानी, शरबत और ठंडा आदि मेरे ही शीतल जल से बनाया जाता था। तीन दिन बारात रूकती थी बड़ा ही आनन्द आता था। गांव की छोटी-मोटी समस्या पंचायत के द्वारा यहीं पीपल के नीचे आपसी प्रेम व्यवहार से निपटा ली जाती थी। मेरे जल में उस समय सुनहरी मछली और छप्पू मेढ़क का परिवार तथा एक बहुत बड़ा कछुआ भोला रहता था। कुछ साल पहले जब पानी काफी कम हो गया था तब कुछ शरारती लोग मछलियों और कछुए को पकड़ ले गये थे। मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पाया था। सिर्फ छटपटाकर रह गया था।

गांव की बहुएं यहीं पर अपना सुख-दुख एक-दूसरे से बांटती थी।

ट्रैक्टर का शोर थम जाने के बाद कुएं ने अपनी कहानी आगे बढ़ाते हुए बताया कि जब मेरी खुदाई हुई थी तो पंडित जी ने बहुत अच्छा मुहूर्त निकाला था। मेरे मां-बाप तो नहीं हैं पर मैं भगवान शंकर की तरह स्वयंभू भी नहीं हूं, बड़े जमींदार साहब ने जब मेरी खुदाई कराई थी तो काम पूरा होने पर एक भव्य पूजा कराई थी। बड़ा भण्डारा हुआ था जिसमें गांव के ही नहीं आस-पास के गांवों के लोग भी आमंत्रित थे। गांव में जब देवी मां की वार्षिक पूजा होती थी तब भी यहीं पर भंडारा होता था वो भी दस-बारह साल से बंद हो गया है। मटरू तुमने तो देखा ही होगा कि जब गांव में किसी लड़के की शादी होती है तो कुएं की पूजा होती है, अब तो सब लोग डी.जे. बजाते कार से आते हैं पर पहले सब लोग पैदल आते थे और महिलाएं मंगल गीत गाती थी पारम्परिक वाद्य यंत्रों तथा लोकगीतों की मधुर धुन कानों में मिश्री घोल देती थी। चौधरी साहब ने अपने बड़े लड़के की शादी में आखिरी बार मेरा रंग रोगन करवाया था। बंदनवार और गुब्बारे से मुझे खूब सजवाया था। उसके बाद किसी ने पलटकर मेरी सुध नहीं ली। चुनाव हुआ, पंचायत बनी, सड़क बनी, नाली बनी, बिजली आई पर किसी ने मेरी तरफ नहीं देखा।

कुएं ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बताया कि जानते हो मटरू! इस पीपल के पेड़ पर सावन में झूला पड़ता

गांव भर की बहू-बेटियां यहीं पर झूला झूलने आती थी।

था, गांव भर की बहू-बेटियां झूला झूलने आती थी। खूब कजरी गीत गाया जाता था। कजरी गीतों में भगवान राम, कृष्ण से लेकर स्वतंत्रता संग्राम, दहेज, प्रदूषण तक विविध विषय समाहित रहते थे। इमरजेन्सी के बाद जब गांव के चकरोड़ को चौड़ा करने के लिए पेड़ काटे जा रहे थे तब एक लोक कवि ने व्यथित होकर एक कजरी गीत लिखा था जिसके बोल यूं थे कि "हरियर पेड़ कटावैं पुरखन कय निसनियां, परधानिबां लागे आगि सजनी"।

अर्थात ऐसी प्रधानी को आग लग जाए जो पूर्वजों की निशानी हरे पेड़ कटवा रही है। इसी तरह नाग पंचमी के त्यौहार पर भी यहीं पर गांव भर के लड़के-लड़कियां इकट्ठा होते थे तथा पास के तालाब में गुड़िया पीटते थे, फिर यहीं लौटकर भीगा हुआ चना और गुड़ प्रसाद के रूप में बांटा जाता था। सपेरा इस दिन सांपों के दर्शन कराता था। ओह! उन दिनों को याद कर मेरी तो आंखें भर आती हैं। बरसात के दिनों में कजरी, धान रोपाई के गीत, दशहरे में आल्हा, क्वार में चौमासा, निर्गुण और होली पर फगुआ सब समाप्त सा हो गया। थोड़ा बहुत कुछ बचा है वह मात्र दिखावा है अब लोगों में वह उत्सवधर्मिता कहां रही?

मटरू उन दिनों शादियां सिर्फ गर्मी के दिनों में ही होती थी। गांव में जब कोई बारात आती थी तो पास के ही बाग में ठहरती थी, बारातियों के लिए पीने का पानी, शरबत और ठंडा आदि मेरे ही शीतल जल से बनाया जाता था। तीन दिन बारात रूकती थी बड़ा ही आनन्द आता था। गांव की छोटी-मोटी समस्या पंचायत के द्वारा यहीं पीपल के नीचे आपसी प्रेम व्यवहार से निपटा ली जाती थी। मेरे जल में उस समय सुनहरी मछली और छप्पू मेढ़क का परिवार तथा एक बहुत बड़ा कछुआ भोला रहता था। कुछ साल पहले जब पानी काफी कम हो गया था तब कुछ शरारती लोग मछलियों और कछुए को पकड़ ले गये थे। मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पाया था। सिर्फ छटपटाकर रह गया था। बाद में पता चला था कि वे लोग उनको मारकर खा गये थे, मेढ़क बच गया था पर तीन साल पहले जब मेरा पानी पूर्णतः सूख गया था, तो वो परिवार सहित धरती मां की गोद में समा गया था, पर आषाढ़ बरसने पर वापस नहीं निकला पता नहीं कहां चला गया। मटरू मैंने तो यहां तक सुना है कि गांव के सारे कुएं और तालाब सूख गए हैं, कईयों को तो पाटकर उस पर मकान आदि बना लिया गया हैं। मटरू आजकल का मानव लालच में इतना अंधा हो गया है कि उसे पानी की कोई चिन्ता ही नहीं है, वह अपने जल स्रोतों को ऐसे तबाह कर रहा है कि जैसे कल उसे और उसके वंशजों को पानी की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

इस बीच मटरू ने दो-तीन बार जम्हाई ली, मटरू को नींद आती देख कुआं बोला "लग रहा है तुम्हें नींद आ रही है बेटा, मेरे पास तो स्मृतियों की पिटारी है, तुम कहां तक सुनोगे और मैं कहां तक सुनाऊंगा। तुम सो जाओ मैं भी सोने की कोशिश करता हूं"। मटरू ने आंख बंद की और अपने घोंसले में आराम से लेट गया। सुबह जब चिड़ियों के कलरव से उसकी नींद टूटी तो उसने देखा कि कुएं की तलहटी में जो चुल्लू भर पानी था वह भी रात में सूख गया। कुएं का शरीर अकड़ा पड़ा है उसके प्राण पखेरू उड़ चुके हैं और वह अनन्त यात्रा पर निकल गया है।

संपर्क करें:
अनुराग मिश्र गैर
10-स्वप्न लोक कॉलोनी
कमता, चिनहट, लखनऊ-226 028
मो. 9412427884
ईमेलः anuraggair@gmail.com